KALA SOPAN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
(A Peer Reviewed Journal)
Volume 01, Issue 01, January 2024
©2024

बुन्देलखण्ड क्षेत्र से प्रकाशित समाचार पत्र 'खबर लहरिया' का विवरणात्मक अध्ययन

विजया
शोधार्थी, भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता सांस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी

शोध सारांश

बुन्देलखण्ड मध्य भारत का प्राचीन क्षेत्र है. जो कि उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश में विस्तारित है. पत्रकारिता के क्षेत्र में बुन्देलखण्ड का योगदान 1857 की क्रांति से माना जाता है. खबर लहरिया बुन्देलखण्ड के चित्रकूट से छपने वाला एकमात्र बुन्देली भाषा का समाचार पत्र है जिसको पूर्ण रूप से महिलाओं द्वारा संचालित किया जाता है. खबर लहरिया समाचार पत्र का सम्पूर्ण काम महिलाओं द्वारा किया जाता है. छापने से लेकर बेचने तक की ज़िम्मेदारी इसमें कार्यरत महिलाओं की है. खबर लहरिया पत्र को प्रमुख रूप से गरीब, आदिवासी और कम-पढ़ी लिखी महिलाओं की मदद से चलाया जा रहा है. इसमें कार्य करने के लिए आठवीं पास होना आवश्यक है. प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य बुन्देलखण्ड क्षेत्र से प्रकाशित समाचार पत्र 'खबर लहरिया' का विवरणात्मक अध्ययन करना है, जिसमें प्राथमिक आंकड़ों तथा द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है. प्राथमिक आंकड़ों के लिए समाचार पत्र तथा वेबसाइट और द्वितीय आंकड़ों के लिए खबर लहरिया से जुडी ख़बरों का अध्ययन किया गया है.

प्रस्तावना

बुन्देलखण्ड मध्य भारत का प्राचीन क्षेत्र है जो कि उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश में विस्तारित है. उत्तर प्रदेश में जालौन, झाँसी, ललितपुर, महोबा, चित्रकूट, बाँदा तथा हमीरपुर आते हैं तथा मध्यप्रदेश में सागर, छत्तरपुर, पन्ना, टीकमगढ़, दतिया, भिंड, दमोह, लहार, विदिशा, रायसेन तथा ग्वालियर के मांडेर तहसील आती हैं. अतः बुन्देलखण्ड बहुत विस्तारित क्षेत्र माना जाता है.

वैश्विक पटल पर बुन्देलखण्ड की शान 'खजुराहो' छतरपुर में बुंदेला शासकों द्वारा निर्मित विश्वप्रसिद्ध है. ये हिन्दू व जैन धर्म के लिए विशेष महत्व रखता है. कुण्डलपुर जो जैन धर्म का

महत्वपूर्ण स्थल है. मैहर माँ शारदे का मंदिर 52 शक्तिपीठों में शामिल है. झाँसी में झाँसी का किला रानी लक्ष्मीबाई की वीरता को प्रदर्शित करता है. ओरछा प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थों में से एक है जहाँ राम राजा मंदिर व रानी गणेशवती का किला झाँसी की भव्यता को दर्शाता है. चित्रकूट का मंदिर बेहद सुंदर है तथा सोनागिरी प्रसिद्ध जैन तीर्थों में शामिल है. कुतुबे बुन्देलखण्ड 'हज़रात बाबा निज़ामी कम्हरिया शरीफ मौदाह' हमीरपुर की प्रसिद्ध दरगाह है. इसके अलावा पन्ना राष्ट्रिय उद्यान, बरुआसागर, बेलासार, सतना आदि प्रसिद्ध स्थल हैं.

बुन्देलखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से ही बुन्देलखण्ड में पत्रकारिता ने विस्तार किया जिसके लिए समाचार पत्रों का प्रकाशन है. हैण्डप्रेस तथा लिथोग्राफी द्वारा किया गया. बुन्देलखण्ड का प्रथम समाचार पत्र कहां और कब छपा यह ठीक से नही कहा जा सकता. उपलब्ध जानकारी के अनुसार 1871 में बुन्देलखण्ड अखबार में 'विचारवहन' मासिक सागर से प्रकाशित हुआ. इसके संपादक श्री नारायण बालकृष्ण थे. 1894 में साप्ताहिक 'पंच'तथा 1891 में 'प्रभात' मासिक और 1896 में'विचार वेदांत'साप्ताहिक झाँसी से प्रकाशित होते थे. श्री अयोध्या प्रसाद ने'संसारदर्पण' समाचारपत्र निकला. बीसवीं सदी में सागर से'दैनिक प्रकाश' का प्रकाशन भगवान प्रिर्जिन्टग प्रेस से प्रारम्भ हुआ. इसके संपादक मास्टर बलदेव प्रसाद जी थे. इस पत्र के मुख्य शीर्ष में निम्न पंक्तियाँ थी-**"देश दशा दर्शन देता, यह मनोभाव नितकरे विकास ,राष्ट्रप्रेम स्वतंत्र मानवहित, पढियेदैनिकपत्र प्रकाश".**

हिंदी पत्रकरिता के क्षेत्र में अग्रगण्य योगदान कोटरा-जालौन निवासी बाबू मूलचंद अग्रवाल का है. इन्होने कलकाता से'दैनिक विश्वमित्र' का प्रकाशन किया. कोंच से 'सत्यप्रकाश' मासिक पत्र छपा. इसके अलावा भाष्कर, देहाती,उद्बोधन (गोपनीय पत्र था), उत्साह, लोकमत, पन्ना गजट, उदय, समालोचक, (उदय व समालोचक पत्र ने गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया).

जातिय पत्रों की शुरुआत 1918-19 के बाद हुआ. कोंच से 'वैश्य शुभचिंतक', मऊरानीपुर से "जुझौतिया प्रभा', झाँसी से 'सना हितकारी', मोठ से 'नाई मित्र' पत्रिका, सागर से भृगु' पत्रिकाका संपादन किया. जैन समाज ने सागर से''गोलपुर जैन' का प्रकाशन किया. वैद्य नाथीराम शर्मा ने 'गृहहस्थजीवन' तथा'वैद्यकल्प्रदुम' पत्रिका निकाली. 1914 मेंदमोह नगर से मासिक'मोहिनी'पत्रिका का प्रकशन किया गया. 1924 मेंश्री नन्द किशोर वर्मा ने'लोकमान्य' केसरी प्रेस बाँदा से प्रकाशित कराया, इसके मालिक नारायण प्रसाद थे. श्री बाल प्रसाद ने 'स्वाधीन' जनजागृति हेतु निकाला गया. झांसी से 'झांसी समाचार पत्र' तथा कोंच से 'निर्भय' पत्र निकला. इसके सहयोगी पत्र 'रसाल' हैं. 'भारतीय लोकमत' उरई से निकला जो दस वर्षों तक लगातार छपता रहा है.

सन् 1920 में सागर से आठ किमी. पश्चिम "रतौना' ग्राम में अंग्रेजों ने कसाई खाना खोलने का पट्टा कलकत्ता की डेवनपोर्ट कम्पनी को प्रदान किया. 1400 पशु काटने का उन्हें लाइसेन्स

मिला. इसी प्रकार का एक कसाई खाना दमोह में भी स्वीकृत हुआ था. इनको बन्द कराने का बीड़ा समाचार पत्रों ने उठाया. साप्ताहिक पत्र "कर्मवीर' जबलपुर के सम्पादक पं. माखनलाल चतुर्वेदी, "वन्देमातरम्' के सम्पादक लाल लाजपतराय, उर्दू के समचार पत्र "ताज' के सम्पादक श्री ताजुद्दीन तथा "श्री शारदा' ने आवाज बुलन्द की. पं. मदनमोहन मालवीय, श्री केशवराम चन्द्र खण्डेकर - सागर - स्वामी कृष्णानन्द आदि के संघर्षों से विवश होकर सरकार को सभी कसाईखाने बन्द करना पड़ा. यह पत्रकारिता की महान विजय थी.

साइमन कमीशन की वापसी "नमक कानून का उल्लघन' इन सबका समाचार पत्रों ने सहयोग देकर प्रचार किया. 1930 में पन्ना से "पतित पावन' साप्ताहिक पत्र निकाला. 1932 में श्री भगवानदास "बालेन्दु' के निदेर्शन में श्री रामगोपाल गुप्त - मादहा - श्री श्याम बिहाबीर चौबे तथा मास्टर नारायण प्रसाद - बांदा - ने मिलकर 'बुन्देलखण्ड केसरी'निकाला, जिसमें जोशीले गीत, राष्ट्रीय समाचार पत्रों की समीक्षा आदि निकलती थी. अधिकतर यह अखबार साइक्लो स्टाइल से छपता था. इसका प्रकाशन उरई से भी होने लगा.1932 में "गहोई मित्र' झांसी से प्रकाशित हुआ. स्वाधीन प्रेस झांसी से जुलाई 1962 में "ग्राम सुधारक' पत्रिका छपने लगी. इसके सम्पादक श्री शरदा चरण तथा प्रकाशक श्री अयोध्या प्रसाद शर्मा थे. सागर से 1938 में "देहाती दुनिया' तथा केसरी प्रेस बांदा से साप्ताहिक "मुखिया' का प्रकाशन प्रारम्भ किया. इसका मुख्य शीर्ष मानस की पंक्ति –**"मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक, पीला पोपे सकल अंग, तुलसी सहित विवेक".**

इसके बाद आनंद, वीरेंद्र, दर्शक, प्रहरी, पुकार, देशी राज्य, जीवन, मधुकर, विजय, विन्ध्य भूमि, विन्ध्य केसरी, पराक्रम, किसान पंचायत प्रकाशित हुए.

स्वतंत्रता के बाद साप्ताहिक दिग्विजय, लोकमत, जयहिंद, हलचल, बुंदेला, संगठनका प्रकाशन शुरु हुआ. बाँदा में क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रभाव व्यापक था. जिसके कारण'सत्यग्रही' गुप्त रुप से छपता था. लोकमान्य तथा बुन्देलखण्ड केसरी सम्पादित कर 'केसरी प्रेस' बाँदा से छपा. श्री रामनाथ ने''कान्यकुब्ज वैश्य हितकारी' मासिक पत्रिका निकाली. पत्रदुखिया किसान, सत्यग्राही, दिवाकरसत्य्ग्रही प्रेस से छपते थे.

श्री पन्ना लाल श्रीवास्तव ने "लीडर', "अमृत बाजार पत्रिका', "नार्दन इण्डिया पत्रिका' के सह सम्पादक के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया है. इन पत्रों की ग्राहक संख्या कम होने के कारण अधिकांश समाचार पत्रों को आर्थिक संकट झेलना पड़ता था. इन पत्रों ने - साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक - स्थानीय रचनाकारों को पर्याप्ति प्रोत्साहन प्रदान किया. स्थानीय महत्व के ऐतिहासक स्मारक, पर्यटन स्थल, लोकगीत आदि सार्वजनिक प्रकाश में आए. इन सबका योगदान स्मरणीय है तथा बुन्देलखण्ड का पत्रकारिता के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान है.

वर्तमान में बुन्देलखण्ड से 17 समाचार पत्र छपते हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं- दैनिक जागरण, दैनिक अमर उजाला, दैनिक जन-जन जागरण, दैनिक स्वदेश, दैनिक राष्ट्रबोध, दैनिक डी.एल.ए., दैनिक इन्किशाप उर्दू, दैनिक हिंदुस्तान, दैनिक लोकपंथ, दैनिक आज, दैनिक विश्व

परिवार, सांध्य दैनिक महाकाल, दैनिक राष्ट्रिय सहारा, दैनिक जनता यूनियन, दैनिक भास्कर, दैनिक सदा-ए-नवी-उर्दू, दैनिक शुभ भास्कर आदि हैं.

साहित्य समीक्षा

शिवकांत तिवारी (2002) ने अपने शोध पत्र "बुन्देलखण्ड क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षणिक योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन " में पाया कि बुन्देलखण्ड की संस्कृति विविधताओं से भरी हैं. राजनीतिक और भोगोलिक सीमाओं में भले ही बदलता रहता है परन्तु इसका आन्तरिक स्वरूप अपरिवर्तित हैं. जिसमें महिलाओं को देवी का दर्जा प्राप्त हैं. स्त्री को रानी लक्ष्मीबाई का अंश व दुर्गा स्वरूप माना जाता हैं. यहाँ की मिट्टी स्वतंत्रता की महक बिखेरती हैं तथा आत्मनिर्भरता को बढावा देती हैं. यहाँ की महिलायें कई प्रकार के घरेलु कार्य कर स्वयं अपने परिवार का पालन पोषण करने में सक्षम हैं.

राजेन्द्र शुक्ला(2014) ने अपने शोध पत्र "बुन्देलखण्ड में महिलाओं की स्थिति" में पाया की बुन्देलखण्ड में दलित समाज में पुरूषों का वर्चस्व है जिस कारण महिलाएं स्वतंत्र विचार अभिव्यक्त नही कर पाती हैं. वह अपने सभी कार्यों के लिए पुरूषों पर आश्रित हैं. उनको घर के बाहर की स्वतंत्रता नहीं है. जिससे यहाँ की महिलाओं में शैक्षिक योग्यता की कमी हैं. यहाँ का दलित व आदिवासी समाज आज भी अपने अधिकारों से अनभिज्ञ हैं. मानवाधिकारों से यहाँ की महिलायें परिचित नहीं हैं. घर में बढ़े-बूढों की सीख ही सर्वोपरि हैं. यहाँ महिलाओं को अपने अधिकार जानने के लिए जागरूक करने की आवश्यकता हैं. ऐसी स्थिति में महिलाओं को जागरूक होने की आवश्यकता है जिससे वहां की आने वाली पीढ़ी की महिलाएं समाज में अपनी सही पहचान एवं सही स्थान बना सके. अपने जीवन में स्वालंबी बन सके.

शोध उदेश्य

प्रस्तुत शोध का उदेश्य बुन्देलखण्ड के चित्रकूट से छपने वाले एकमात्र बुन्देली भाषा का समाचार पत्र है **"खबर लहरिया"** का विवरणात्मक अध्ययन करना हैं. जिसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो का उपयोग किया गया है.

समाचार पत्र खबर लहरिया का परिचय

खबर लहरिया बुन्देली भाषा में प्रकाशित एक आंचलिक समाचार पत्र है. इसकी शुरुआत 2002 में गैर- सरकारी संगठन द्वारा की गयी. यह आठ पेजों का साप्ताहिक स्थानीय भाषा का समाचार पत्र है, जो चित्रकूट से छपता है. खबरलहरिया का पहला अंक मई 2002 में कर्वी से प्रकाशित किया गया.

इस पत्र को सन् 2009 के यूनेस्को साक्षरता पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है. यह पत्र दलित ग्रामीण महिलाओं द्वारा निरन्तर अशासकीय संस्था के प्रोत्साहन से निकाला जाता है. इस अखबार को इलाके की बेहद गरीब, आदिवासी और कम-पढ़ी लिखी महिलाओं की मदद से निकाला जा रहा है.

संपादन और समाचार का पूरा काम महिलाएं करती हैं. अखबार बांटने के काम में पुरुष हॉकर मदद करते हैं. ग्रामीण महिलाओं के इस अखबार में काम करने के लिए कम से कम आठवीं कक्षा पास होना जरूरी है, लेकिन नव साक्षर भी जुड़ सकते हैं.

खबर लहरिया की विषयवस्तु

इस अखबार में सभी तरह की खबरें होती हैं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र, पंचायत, महिला सशक्तीकरण, ग्रामीण विकास की खबरों को ज्यादा महत्व दिया जाता है. समाचार स्थानीय बुंदेली बोली में और बड़े अक्षरों में छापे जाते हैं ताकि नवसाक्षर महिलाएं आसानी से पढ़ सकें. इसका प्रकाशन – बुंदेलखंडी बोली में चित्रकूट से आठ वर्षों से तथा बांदा से तीन वर्षों से हो रहा है. इसका प्रकाशन स्वयंसेवी संस्था निरंतर कर रही हैं तथा यह समाचार पत्र स्वयसेवी संस्था 'निरंतर' द्वारा वित्तपोषित हैं. शुरुआत में 'निरंतर' ऐसी महिलाओं की मदद करता था जो घरेलू प्रताडन्ा सहती थीं।

समाचार पत्र से सम्बंधित प्राप्त आंकड़ों के अनुसार इसकी प्रसार संख्या 4500 तथा पाठक संख्या 20000 एवं मूल्य – दो रुपए है. चित्रकूट से खबर लहरिया की लगभग 2500 प्रतियाँ छपती हैं और बाँदा से 2000. आंकड़ों के मुताबिक लगभग 20000 से ज्यादा लोग इस पत्र को पढ़ते हैं. वर्तमान में खबर लहरिया का डिजिटल का नेटवर्क भी है. जो खासतौर पर सरकार की ग्रामीण विकास और सशक्तीकरण के लिए बनाई गई योजनाओं के दावों और उनकी हकीकत के बीच के अंतर को उजागर करता है. खबर लहरिया का टैगलाइन- हमारी खबर, हमारी भाषा में – ये है खबर लहरिया की खासियत. खबर लहरिया के डिजिटल प्लेटफार्म पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा, औरतों पर काम, जासूस या जर्नलिस्ट जैसे गंभीर मुद्दों को कवर करता है.

खबर लहरिया की डिजिटल वेबसाइट www.khabarlahariya.org है. यहाँ सभी प्रकार के विषयों से समावेश हैं. जिसमें आपकी आवाज़ नमक विकल्प में- विकास,महिलाओं के खिलाफ हिंसा, औरते काम पर, दा कविता शो, एडिटर देगी जवाब , जासूस या जर्नलिस्ट, क्राइम, भ्रष्टाचार, करोना वायरस शामिल हैं. नेतानगरी नमक विकल्प में राजनीति, चुनाव, पंचायती राज से सम्बंधित ख़बरों को शामिल किया गया हैं. जिससे क्षेत्र की हर प्रकार की राजनीतिक खबर को लोगों तक पहुचायां जा सके. तफ़रीबाज़ी में मनोरंजन, खेलकूद, जवानी दीवानी, पर्यटन आदि से सम्बंधित सूचनाओं और जानकारियों से लोगों को मनोरंजित किया जा रहा हैं. अंग्रेजी में विषयवस्तु को पसंद करने वाले दर्शकों के लिए अंग्रेजी में खबरे व जानकारी उपलब्ध हैं जिसमे मूल रूप से विकास, लिंग, जाति, युवा, संस्कृति, बुन्देलखण्ड आदि से सम्बंधित जानकारियों का समावेश किया गया हैं. डिजिटल प्लेटफार्म पर भी सभी कार्य केवल महिलाओं द्वारा ही संपन्न किया जाता हैं. यह महिलाओं को सशक्त बनने तथा सदैव विकास की रह पर चलने के लिए प्रेरित करता हैं. खबर लहरिया का उद्देश्य गाँव देहात की महिलों में आत्मविश्वास जगाना हैं. अपना विकास अपने हाथ की नीति को प्रचारित करना है. अगर कोई महिला गाँव से है या कम पढ़ी लिखी है इसका ये मतलब नहीं की वह स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर सकती प्रत्येक स्त्री के पास आने संघर्षों की अलग कहानी होती हैं जिससे लाखों महिलों को उम्मीद दी जा सकती है और इन्ही महिलाओं की आवाज़ खबर लहरिया के माध्यम से देश में गूँज रही हैं. भारत ही नहीं विदेशों में भी खबर लहरिया का बोलबाला हैं. खबर लहरिया बुन्देलखण्ड की ओर विश्व का ध्यान केद्रित करना चाहता हैं ताकि यहाँ की संस्कृति से सभी को अवगत कराया जा सके.

सम्मान और पुरूस्कार

खबर लहरिया को प्राप्त होने वाले सम्मान इस प्रकार हैं- 2004 में, ख़बर लहरिया को सामने लाने वाली महिला पत्रकारों की सामूहिक पत्रकारिता में महिलाओं के लिए प्रतिष्ठित चमेली देवी जैन पुरस्कार से सम्मानित किया गया. 2009 में, अखबार को यूनेस्को किंग सेजोंग साक्षरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया. इसके बाद अखबार के विस्तार की योजना बनाई गई. 2012 में, अखबार ने लिंग संवेदनशील रिपोर्टिंग के लिए लाडली मीडिया पुरस्कार जीता. इसके अलावा, उसी वर्ष भारतीय समाचार चैनल टाइम्स नाउ ने अद्‌भुत भारतीय पुरस्कार से ख़बर लहराया. 2013 में अखबार को कवि कैफी आजमी की याद में कैफी आजमी पुरस्कार प्रदान किया गया था. यह पुरस्कार ऑल इंडिया कैफ़ी आज़मी अकादमी द्वारा हर साल उनकी पुण्यतिथि पर प्रदान किया जाता है.

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित बुंदेलखंड है जो देश के पिछड़े इलाकों में से है। यहां का समाज बिलकुल अलग है, राजनीतिक और आर्थिक शक्तियां भी ऐसी हैं कि यहां किसी संवाददाता के लिए काम करना आसान नहीं है। इस इलाके से खबर निकालने का मतलब है शक्तिशाली राजनीतिज्ञों से लोहा लेना हैं. ऐसे अखबार के लिए बहुत कम गुंजाइश बनती है जो पूरी तरह दलित, मुस्लिम और आदिवासी समुदाय की महिलाएं चलाती हैं। इन दलित महिलाओं को अखबार की नौकरी से खुद को सशक्त बनाने और अपने तरीके से जीने में मदद मिली है।

परेशानियों के बावजूद ये महिलाएँ डटकर खबर लिखती हैं- चाहे वो दलितों के साथ दुर्व्यवहार का मामला हो, खराब मूलभूत सुविधाएँ हों, नरेगा की जाँच पड़ताल हो, पंचायतों के काम करने के तरीके पर टिप्पणी हो, या फिर सूखे की मार से परेशान किसानों और आम आदमी की समस्या हो, सूखे की वजह से लोगों की पलायन की कहानी हो, या फिर बीमारी से परेशान लोगों के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी. खबर लहरिया का डिजिटल प्लेटफार्म पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा, औरतों पर काम, जासूस या जर्नलिस्ट जैसे गंभीर मुद्दों को कवर करता है. यहाँ की रिपोर्टर बेबाकी की मिसाल पेश करती हैं. यह समाचार पत्र पेड न्यूज़ के पूर्णता खिलाफ है एवं पेड न्यूज़ की निंदा करता हैं. महिलाओं को सशक्त बनाने में खबर लहरिया का योगदान अतुलनीय हैं.

सन्दर्भ ग्रन्थ

- **https://khabarlahariya.org/khabar-lahariya-in-the-media/**

- https://www.theguardian.com/global-development/2016/aug/10/india-all-female-newspaper-khabar-lahariya-gender-taboos-old-news?CMP=share_btn_tw
- https://m-hindi.webdunia.com/article/bbc-hindi-news/%E0%A4%96%E0%A4%AC%E0%A4%B0-

%E0%A4%B2%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AF%E0%A4%BE-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%8F-%E0%A4%AF%E0%A5%82%E0%A4%A8%E0%A5%87%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%8B-%E0%A4%B8%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A8-109080700155_1.htm

- https://www.thehindu.com/todays-paper/tp-features/making-waves-with-news/article4426550.ece
- https://www.firstpost.com/living/up-to-bihar-why-a-group-of-rural-women-journalists-went-online-624914.html
- https://www.theguardian.com/journalismcompetition/manini-sheker-shortlist-2011
- https://www.aljazeera.com/news/2009/9/8/reading-the-future
- https://archives.cjr.org/behind_the_news/postcard_from_chitrakoot.php?page=all
- https://bundelkhand.in/bundelkhand-research
- तिवारी, शिवकांत (2002), "बुन्देलखण्ड क्षेत्र में मिशनरी विद्यालयों के शैक्षणिक योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन ", बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय.
- शुक्ला, राजेन्द्र (2014), "बुन्देलखण्ड में महिलाओं की स्थिति", जीवाजी विश्वविद्यालय.